http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 11, 1-5

Article ID:496

चना उत्पादन बढ़ाने की उन्नत प्रौद्योगिकी

डा. आनन्द कुमार, डा. संजय कुमार, डा. दिनकर, डा. प्रकाश सिंह, डा. रवि रंजन कुमार[2] एवं डा. पी. के सिंह

[1]पौधा प्रजनन और आनुवंशिकी विभागय [2]आण्विक जीव विज्ञान एवं जेनेटिक इंजीनियरिंग विभागय
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपूर, बिहार

*अनुरूपी लेखक
डा. आनन्द कुमार*

दलहनी फसलों में चना सबसे प्रमुख फसल है। भारत चने का सबसे बड़ा उत्पादक होने के साथ-साथ सबसे बड़ा उपभोक्ता भी है। जलवायु परिवर्तन के दौर में टिकाऊ खेती, फसल विविधिकरण, मृदा की उर्वराशक्ति को कायम रखने और पोषण सुरक्षा में चना का अति महत्वपूर्ण योगदान है। बिहार में चना की खेती मुख्य रूप से टाल भूमि वाले क्षेत्रों में की जाती है तथा धान कटनी के बाद परती रहने वाले क्षेत्रों में होती है। बिहार के टाल क्षेत्रों में मुख्यतः चने एवं मसूर की खेती की जाती है, जिसके कारण टाल भूमि को दाल का कटोरा भी कहा जाता है। पिछले कुछ वर्षों में बिहार में दलहनी फसलों का क्षेत्रफल बढ़ा है और अच्छी उपज प्राप्त हो रही है। किन्तु चने के निरंतर पैदावार में बढ़ोतरी के लिए उपयुक्त एवं सफल तकनीक को अपनाने की नितांत आवश्यकता है। बिहार में चना की खेती 58.22 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है, तथा उत्पादन 67.19 हजार टन एवं उत्पादकता 1154 कि॰गा्र॰/हेक्टेयर है जो इसकी उत्पादन क्षमता 2000-2500 कि॰गा्र॰/हेक्टेयर से बहुत कम है। बिहार में चना की खेती साधारणतः असिंचित क्षेत्रों में की जाती है, विगत वर्षों में उत्तर पूर्वी क्षेत्रों के लिय अनुषंसित प्रभेद यथा: पी.जी. 186 एवं बी.जी 372 दस से पन्द्रह वर्ष पुरानी हो जाने के कारण इनके उपज में कमी देखी जा रही है।

उपरोक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये बिहार कृषि विष्वविद्यालय,सबौर भागलपूर के वैज्ञानिकों ने चने की अधिक उपजषील, कीट एवं विभिन्न रोगों के प्रति मध्यम प्रतिरोधों उपयुक्त किस्म सबौर चना-1, सबौर चना-2 एवं सबौर चना-3 को विकसित किया है।

सबौर चना-1 सबौर चना-1 किस्म लम्बे (55-60 से॰मी॰) अर्द्व -खड़ा एवं उकठा, जड-गलन रोगों तथा फली छेदक कीट के प्रति मध्यम प्रतिरोधी किस्म है। इसके फूल गुलाबी रंग के होते है तथा इसकी परिपक्वता अवधि 130-135 दिनों की है। इसके दानें बड़े तथा पीले रंग के होते है। इसके औसत बीज का वजन 25.84 ग्राम/100 बीज है। इसकी औसत उपज 22-23 क्वि॰/हे॰ जबकि बिहार के लिये अनुशंसित प्रभेद जी.सी.पी. 105, की औसत उपज 18 क्वि॰/हे॰ है। दोनों प्रभेदों का उत्पादन लागत बराबर है लेकिन नयी विकसित किस्म सबौर चना-1, जी.सी.पी. 105 से 25-30 प्रतिशत अधिक उपज देती है, जिसके कारण लगभग 12000-14000 रु॰ प्रति हेक्टयर की अतिरिक्त लाभ हो सकता है। विगत वर्षों में चना के कटाई के समय प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण कटाई में देरी से फल गिरने तथा दाने के झ्ारने की समस्या सामने आ रही है तथा कटाई के लिये मजदूरों की कमी एवं हाथ से कटाई खेती के लागत को बढ़ा रही है। इसके मद्देनजर सबौर चना-1 के विशेष गुणों के कारण यांत्रिकी विधि से कटाई के लिये उपयुक्त किस्म है। ताप सहिष्णु गुण के कारण इसकी खेती धान कटनी के बाद परती वाले क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है।

सबौर चना-1

सबौर चना-2: पछेती बुआई की स्थिति के लिए उपयुक्त किस्म हैं। इसकी बुआई 05-15 दिसम्बर तक कर सकते है। लम्बे (60-65 से°मी°) अर्द्ध-खड़ा एवं उकठा, जड-गलन रोगों तथा फली छेदक कीट के प्रति मध्यम प्रतिरोधी किस्म है। इसके फूल गुलाबी रंग के होते है तथा इसकी परिपक्वता अवधि 110-115 दिनों की है। इसके दाने छोटा तथा पीले रंग के होते है। इसकी औसत बीज का वजन 14.5 ग्राम/100 बीज है। इसकी औसत उपज 18-19 क्वि°/हे° है जबकि बिहार के लिये अनुशंसित प्रभेद पी.जी. 186 की औसत उपज 15 क्वि°/हे° है। दोनों प्रभेदों का उत्पादन लागत बराबर है लेकिन नयी विकसित किस्म सबौर चना-2 पीÛजीÛ 186 से 20-25: अधिक उपज देती है, जिसके कारण लगभग 10000-12000 रू° प्रति हेक्टयर की अतिरिक्त लाभ हो सकता है। ताप सहिष्णु गुण के कारण इसकी खेती धान कटनी के बाद परती वाले क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है। यह प्रभेद राज्य किस्म विमोचन समिति द्वारा वर्ष 2020 में विमोचित कर दिया गया है।

भूमि का चुनाव

इसकी खेती बलुई-दोमट भूमि से लेकर भारी मटियार भूमि में की जा सकती हैं। परन्तु मटियार दोमट भूमि में जल निकासी का उचित प्रबंधन आवश्यक है। इसके लिये खेत को समतल कर लेना चाहिए।

खेत की तैयारी अच्छी खेती के लिए भूमि की सतह ढीली और ढेलेदार होनी चाहिए। जड़ों की समुचित वृद्धि के लिए भूमि की गहरी जुताई करना लाभप्रद होता है। इसके लिए खरीफ की फसल काटने के पश्चात एक गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से कर देनी चाहिए। इसके बाद, बुआई के लिए खेत को तैयार करते समय 2-3 जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करनी चाहिए। बड़े ढ़ेलों को तोडने तथा खेत को समतल बनाने के लिए पाटा लगाना चाहिए।

बीजोपचार

(अ). रोग एवं कीटनाशी रसायनों से बीजोपचार

विभिन्न रोगों (उकठा एवं जड़ विगलन) से फसल के बचाव हेतु 2.0 ग्राम थीरम $ कार्बेन्डाजिम 01 ग्राम प्रति कि० ग्रा० बीज अथवा थीरम 03 ग्राम प्रति किलो बीज अथवा कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से बीज शोधन करना चाहिये। कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई° सी° कीटनाशी दवा का 3-6 मि°ली°/ कि°ग्रा° बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।

(ब). जीवाणु संवर्धन (राइजोबियम कल्चर) से बीजोपचार

विभिन्न दलहनों के लिए अलग-अलग तरह का राइजोबियम कल्चर होता है। एक पैकेट राइजोबियम कल्चर (200 ग्राम) 10 कि.ग्रा. बीज को उपचारित करने के लिए पर्याप्त होता है। 100 ग्राम गुड़ अथवा चीनी को आधा लीटर पानी में घोल लेना चाहिए। घोल को गर्म करके ठण्डा कर इसमें एक पैकेट राइजोबियम कल्चर को अच्छी तरह डण्डे से चलाकर मिला देना चाहिए। बाल्टी या घड़े में 10 कि.ग्रा. बीज डालकर घोल में मिला देना चाहिए। ताकि राइजोबियम बीज की सतह पर चिपक जाए। इस प्रकार राइजोबियम कल्चर से सने हुए बीजों को कुछ देर तक छांव में सुखा लेना चाहिए। धूप में बीजों को सुखाने से राइजोबियम जीवाणु मर जाते हैं जिससे वांछित लाभ नहीं मिलता है।

(स). पी.एस.बी. कल्चर (फास्फेट साल्यूबिलाइजिंग बैक्टीरिया) से बीजोपचार

राइजोबियम कल्चर की भांति ही फास्फेट घुलनशील बैक्टीरिया (पी.एस.बी.) कल्चर के पैकेट भी उपलब्ध रहते हैं। जिन्हें बाजार या कृषि विश्वविद्यालयों से खरीदा जा सकता है। राइजोबियम कल्चर से बीजोपचार की तरह ही पी.एस.बी. कल्चर से बीजोपचार करना चाहिए।

बुआई का समय अच्छी उपज लेने के लिये चना की बुआई का उचित समय 1 नवम्बर से 30 नवम्बर है, लेकिन टाल और दियरा छेत्रों में इसकी बुआई 20 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक कर देते हैा सबौर चना-3 पछेती बुवाई की स्थिति के लिए उपयुक्त है, इसे धान की फसल के बाद 01-20 दिसंबर के बीच बोया जा सकता है । बुआई देशी हल के पीछे लगे पोरे से कूंड़ों में या सीड ड्रिल करनी चाहिए। इसके लिए पंक्तियों (कूड़ों) के बीच की दूरी 30 से.मी. तथा पौधों के मध्य दूरी 10 से.मी. रखी जाती है।

बीज दर

चना के बीज की मात्रा दानों के आकार (भार), बुआई के समय एवं ढंग और भूमि की उर्वराशक्ति पर निर्भर करती हैं। यदि प्रजाति बड़े दाने, सबौर चना-1 वाली है तब प्रति हैक्टेयर 80-85 कि.ग्रा./हे., मध्यम दाना (सबौर चना-3) 75-80 कि.ग्रा. बीज का उपयोग करना चाहिए। छोटे दाने वाली प्रजातियों का बीज 60-65 कि.ग्रा. प्रति हेक्टयर के हिसाब से बोना चाहिए।

चना के उन्नत व अनुशँसित प्रजातियां:

समय से बुआई के लिये प्रभेद:

उन्नत प्रभेद	बुआई का समय	परिपक्वता अवधि दिनों में	औसत उपज (क्विं./हेक्टेयर)	विशेषताएँ
सबौर चना–1	1 नवम्बर से 30 नवम्बर	130–135	22–24	उकठा, शुष्क जड़ विगलन स्तंभन (स्टन्ट)रोगों के प्रति मध्यम प्रतिरोधी, फली छेदकके प्रति मध्यम प्रतिरोधी
जी.एन.जी. 2207	1 नवम्बर से 30 नवम्बर	128–130	16–17	उकठा रोग के प्रति मध्यम प्रतिरोधी
बी. जी. 3043	1 नवम्बर से 30 नवम्बर	127–134	16–17	उकठा रोग के प्रति मध्यम प्रतिरोधीं
राज विजय चना 2023	1 नवम्बर से 30 नवम्बर	125–128	15–16	यांत्रिक विधि से कटाई के लिये उपयुक्त
पंत चना 10	1 नवम्बर से 30 नवम्बर	130–132	17–18	उकठा, र रोगों के प्रति मध्यम प्रतिरोधी
जी.सी.पी. 105	1 नवम्बर से 30 नवम्बर	140–145	18–20	मध्यम दाना (18 ग्राम/100 दानों का वजन), उकठा रोग रोधी।
देर से बुआई के लिये प्रभेद :				
सबौर चना 3	1 से 15 दिसम्बर तक।	120–130	19–20	पछेती बुआई की स्थिाति के लिए उपयुक्त किस्म,उकठा, जड–गलन रोगों तथा फली छेदक कीट के प्रति मध्यम प्रतिरोधी
सबौर चना 2	15 दिसम्बर तक	115–120	18–19	पछेती बुआई की स्थिाति के लिए उपयुक्त किस्म,उकठा, जड–गलन रोगों तथा फली छेदक कीट के प्रति मध्यम प्रतिरोधी
जी.एन.जी. 2299	1 से 15 दिसम्बर तक।	116–120	14–15	उकठा के प्रति सहिष्णु
करन चना 20 (RSGD 1155)	1 से 15 दिसम्बर तक।	116–120	16	उकठा, शुष्क जड़ विगलन स्तंभन (स्टन्ट)रोगों के प्रति मध्यम प्रतिरोधी, फली छेदकके प्रति मध्यम प्रतिरोधी
उदय (के.पी.जी. 59)	15 दिसम्बर तक	130–135 दिनों में	20–22 क्विंटल/हेक्टेयर	क्षेत्र :उतरी बिहार, उकठा जड गलन एवं फली छेदक के प्रति सहिश्णु।
बी.जी. 372 (पूसा 372)	15 दिसम्बर तक	130–140 दिनों में	15–20 क्विंटल/हेक्टेयर	क्षेत्र :– पूरा बिहार, छोटा दाना (100 दानो का वनज 13 ग्राम), उकठा, जड़ गलन एवं फली छेदक प्रति सहिष्णुता।
पी.जी. 186	15 दिसम्बर	128–135 दिनों में	18–20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर	छोटा दाना (100 दानों का वजन 14 ग्राम), उकठा ,जड़ गलन एवं फली छेदक के प्रति सहिष्णुता।

खाद एवं उर्वरक

चना की अच्छी उपज लेने के लिए 20 कि.ग्रा. पोटाश व 20 कि.ग्रा. गंधक प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। पछेती बुआई की दशामें 40 कि.ग्रा. नेत्रजन, 40 कि.ग्रा. पोटाश व 20 कि.ग्रा. गंधक का उपयोग करना चाहिए।

निकाई गुडाई एवं खरपरवार प्रबंधनः दो बार निकाई गुडाई करना आवश्यक है। प्रथम निकाई गुडाई बोआई के 25-30 दिनों बाद तथा दूसरी 45-50 दिनों बाद करे। रसायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के तुरन्त बाद 48 घंटो के अंदर खरपतवारनाशी रसायन पेन्डीमेंथलिन 30 ई० सी० 3.3 लीटर दवा प्रति हे० की दर से 600-700 लीटर पानी में घोल कर मिट्टी की सतह पर छिड़काव करने से मौसमी खरपतवार नष्ट हो जाते है।

रोग प्रबन्धन

उत्पादकता बढ़ानें के लिए फसलों का जैविक एवं अजैविक कारकों से बचाव अत्यन्त आवश्यक है। रोग प्रबन्धन जिसमें रोगरोधी प्रजातियों का प्रयोग, स्वस्थ्य बीजों के प्रयोग, कर्षण क्रियाओं में बदलाव, कवकनाशी तथा जैवनाशी तत्वों का प्रयोग सम्मिलित है, उत्पादकता को स्थिर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। चने के प्रमुख रोग एवं उपाय।

1 उकठा रोग

उकठा रोग मृदा और बीजजनित रोग है। यह रोग फयूजेरियम आक्सीस्पोरम उपजाति साइसराई नामक कवक से होता है। रोगी पौधों की उपर की पत्तियों का मुरझाना और धीरे- धीरे पूरे पौधे का मुरझाकर सूख जाना इस रोग का प्रमुख लक्षण है।

रोग के लक्षण:

1 उकठा रोग खेतो में छोटे छोटे क्षेत्रो में दिखायी देता है।

2 रोगग्रस्त पौधे में सबसे पहले उपरी पÙिायॉ एवं टहनियां मुरझाती है।

3 रोगग्रस्त पौधे मुरझाकर सूख जातें हैं एवं भुसे रंग की हो जाती है

4 रोगग्रस्त पौधे आसानी से नहीं उखडते हैं।

5 तना एवं जडं के बीच से विभाजित करने पर लंबी भूरी, काली रंग की धारी
दिखाई पड़ती है।

रोग संचरण: इस रोग के कवक सबसे पहले जडों में प्रवेश करने के बाद पूरे पौधे में प्रवेश कर जातें हैं। बीज बनने के समय यह बीजों को संक्रमित कर बीज में स्थापित हो जाते हैं। संक्रमित बीज की बुवाई करने से पौधा रोगग्रस्त हो जाता है। इस रोग के जीवाणु मृदा में 6 वर्षों तक जीवित रहते है। इस रोग का प्रकोप क्षारीय मिट्टी में अधिक होता है तथा तापमान 25-300 डिग्री सेंटीग्रेड रहने पर तेजी से फैलता ह ा

प्रबन्धन

- चना की बुआई नवम्बर के प्रथम सप्ताह में करना चाहिए।
- बीज को टाइकोडर्मा 4 ग्राम, वीटा वैक्स फफूंद नाशी की 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बुवाई करना चाहिए।

उन्नत व रोग सहिष्णु प्रजातियो जैसे अवरोधी,

2 शुष्क जडं गलन (ड्राई रूट रॉट): यह रोग राइजोक्टोनिया बट्टीकोला (कवक) के द्वारा होता है। यह एक प्रमुख मृदाजनित रोग है जिसका प्रकोप ज्यादातर असिंचित खेती में होती है। जब मृदा में नमी की कमी हो एवं वातावरण का तापमान 30°ब् या इससे अधिक हो तो इस रोग का प्रकोप तेजी से होता है।

लक्षण:

1 रोगग्रस्त पौधे खेतों में बिखरे हुए दिखाई पडते हैं।

2 रोग का प्रकोप फली एवं दाना बनने की अवस्था में अधिक होता है।

3 रोगग्रस्त पौधे सूखी घास की तरह दिखाई पडती है।

4 पत्तियॉ पीली तथा जडे सडकर काली हो जाती है।

5 नमी की कमी के कारण जडे इतनी शुष्क हो जाती है कि तोडने पर कडक से टूट जाती है।

प्रबंधन:

1 रोगरोधी/सहिष्णु/उन्नतशील प्रजाति का चयन करना चाहिए।

2 गर्मी (मई-जून) में खेतों की गहरी जुताई करने से मिट्टी में मौजूद कवक के स्केलेरोशिया तेज धूप के कारण मर जाते है।

3 बुवाई समय पर करना चाहिए।

4 खेत® में रोग के लक्षण दिखाई देने पर हल्की सिंचाई करना चाहिए।

5 अलसी (तीसी) के साथ अन्तः फसल/मिश्रित खेती करना चाहिए।

6 बीज उपचार: वीटावेक्स कवकनाशी 1 ग्राम + ट्राइकोडर्मा चूर्ण 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करना चाहिए या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज दर या कैप्टान/थीरम कवकनाशी 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करना चाहिए।

(3) तना-जडं संधि गलन रोग (कॉलर रॉट): यह रोग स्केलेरोषियम रोल्फसाई नामक कवक के द्वारा होता है। यह एक मृदाजनित रोग है, जिसका प्रकोप सिंचित खेती में अधिक होता है।

जब खेत में नमी अधिक हो तथा वातावरण का तापमान 25-30 डिगी्र सेंटीग्रेड के बीच हो तो यह रोग तेजी से फैलता है। खेतों में सडे गले अवशेष भी रोग को फैलाने में सहायक होते है। आरंभिक अवस्था मे ही रोग के प्रकोप से पौधों की संख्या कम हो जाती है जिससे उत्पादन काफी कम जाता है।

लक्षण:

1 रोगका संक्रमण अंकुरण की अवस्था (नवजात पौधे) से ही प्रारंभ हो जाता है।

2 संक्रमित पौधा पीला होकर मरने लगता है।

3 तना-जड संघि (कॉलर) भाग पतला एवं भूरा होकर सड जाता है।

4 संक्रमित तना-जड संघि भाग कवक के सफेद रंग के सूत्रों से ढक जाते हैं और इनमें भूरे रंग के सरसों के दानों के बराबर कवक के स्केलेरोशिया भी दिखाई पडते हैं।

प्रबंधन:

1 रोगरोधी/सहिष्णु/उन्नतशील प्रजाति का चयन करना चाहिए।

2 खेत में फसल अवशेष नहीं रहना चाहिए।

3 खेत में अधिक नमी नही रहना चाहिए।

4 बीज उपचार: वीटावेक्स कवकनाशी 1 ग्राम $ ट्राइकोडर्मा चूर्ण 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करना चाहिए या वैविस्टीन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज दर या वैविस्टीन $ थीरम (1: 2) - 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करना चाहिए।

5 दीर्घकालिक (चार-पॉच वर्श) फसल चक्र अपनाने से रोग का प्रकोप कम जाता है।

रोग नियंत्रण विधियां

रोग प्रबन्धन जिसमें रोगरोधी प्रजातियों का प्रयोग जेसे सबौर चना-1, सबौर चना-2 एवं सबौर चना-3, स्वस्थ्य बीजों के प्रयोग, कर्षण क्रियाओं में बदलाव, कवकनाशी तथा जैवनाशी तत्वों का प्रयोग सम्मिलित है, उत्पादकता को स्थिर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।जहां तक हो सके पिछली फसल के बिना सड़े-गले अवशेष खेत में नहीं छोड़ने चाहिए। बुआई और अंकुरण के समय मृदा में अधिक नमी नहीं होनी चाहिए। मई-जून में खेत को गहरी जोत कर छोड़ देना चाहिए। दीर्घकालिक (तीन-चार वर्ष) फसल चक्र अपनाने से इस रोग को कम किया जा सकता है। खेत में गोबर की खाद 5 टन प्रति हे0 की दर से मिलाने से इस रोग के बीजाणु कम हो जाते हैं। बुआई से पहले बीज का उपचार अवश्य करें।

कीट प्रबंधन: सबौर चना -1 मध्यम प्रतिरोधी किस्म हैं, परन्तु जरुरत पड़ने पर फली छेदक कीट प्रबंधन के लिये फेरोमोन ट्रैप 10 ट्रैप प्रति हेक्टर लगाये। रासायनिक विधि से कीट नियंत्रण हेतु स्पीनोसैड 45.5 एस. सी./ 1 मि०ली० प्रति 5 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। रासायनिक दवाओं में प्रोफेनोफॉस 50 ई. सी./1 मि०ली० प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। असिंचित दशा में फेनवेलोरेट 4 प्रतिशत धूल 20 कि० ग्रा० प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करना चाहिए।

कटाई, मड़ाई एवं भण्डारण

सामान्य रूप से जब चना के पौधों से पत्तियां झड़ जाती हैं या पीली अथवा हल्की भूरी हो जाती हैं, फसल की कटाई कर ली जाती है। फली से दाना निकाल कर यदि दांत से काटा जाए और कट की आवाज आए, तब समझना चाहिए कि चना की फसल कटाई के लिए तैयार है। काटी गयी फसल को एक स्थान पर इकट्ठा करके खलिहान में 4-5 दिनों तक सुखाकर मड़ाई की जाती है। मड़ाई थ्रैसर से या फिर बैलों या ट्रैक्टर को पौधों के उपर चलाकर की जाती है। भूसे और दाने को पंखों या प्राकृतिक हवा से अलग कर लिया जाता है और दानों को बोरों में भर दिया जाता हैै। भण्डारण के लिए चना के दानों में लगभग 10-12 प्रतिशत नमी होनी चाहिए। अधिक नमी होने पर दानों को अच्छी तरह सुखाकर रखना चाहिए। घुन से चना को काफी क्षति पहंचती है, अतः बन्द गोदामों या कुठलों आदि में चना का भण्डारण करना चाहिए।